=प्राण चेतनाइं करनें सहित तिण नें जीव कहीजे जिण रो स्वरूप तिण नें जीव तत्व कहीजे=१ =जीवां रे विषे जिणे करनें कर्म आवे तिण नें आश्रव कहीजे
=प्राण चेतनाइं करनें रहित जिण नें अजीव कहीजे जिण रो स्वरूप तिण नें अजीव तत्व कहीजे=२ एरो स्वरूप तिण नें आश्रव तत्व कहीजे

॥जीवा१ जीवा२ पुन्नं३ पावा४ सव५ संवरो य६ निज्जर
णा७ बंधो८ मुक्खो य तहा९ नव तत्ता हुंति नायव्वा॥१॥ चउ
दस१ चउदस२ बयालीसा३ बासीया४ हुंति बायाला
५॥ सत्तावन्नं६ बारस७ चउ८ नव भेया कमेणेसिं॥२॥ एग
विह१ दुविह२ तिविहा३ चउव्विहा४ पंच५ छव्विहा६ जी
वा॥ चेयण तस इयरेहिं॥ वेय गई करण काएहिं॥३॥
एगिंदिय सुहुमियरा॥ सन्नियर पणिंदिया य स बि

=जीव संघाते बंध्यो जे कर्म पुद्गल करी जे जिणे करनें तिण नें बंध कहीजे जिण रो स्वरूप तिण नें बंध तत्व कहीजे=
=सर्व कर्मां रो सर्वथा क्षय करणो तिण नें मोक्ष कहीजे जिण रो स्वरूप तिण नें मोक्ष तत्व कहीजे=

=मतिज्ञान१ श्रुतज्ञान२ अवधिज्ञान३ मनपर्यवज्ञान४ केवलज्ञान५=२= चक्षुदर्शन१ अचक्षुदर्शन२ अवधिदर्शन३ केवलदर्शन४=२

ति चउ॥ अपज्जत्ता पज्जत्ता॥ कमेण चउदस जिय
ठाणा॥४॥ अथ जीवलक्खणं॥ नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च
तवो तहा॥ वीरियं उवओगो य॥ एयं जीवस्स लक्खणं
॥५॥ आहार सरीर इंदिय॥ पज्जत्ती आणपाण भास
मणे॥६॥ चउ पंच पंच छप्पिय॥ इग विगला सन्नि सन्नी
णं॥ दस पाणा जि आणपाणा॥ इंदिय पंच ऊसासा आऊ
बल रूवा॥ एगिंदिएसु चउरो॥ विगलेसु छ सत्त अट्ठ

=एकेंद्री रे इंद्री१ स्वासोस्वास२ आयुषो३ कायबल४=१= बेंद्री रे इंद्री२ स्वासोस्वास आउखो वचनबल कायबल६= तेंद्री रे ३ इंद्री स्वासोस्वास आउखो वचनबल कायबल= चौरींद्री रे ४ इंद्री स्वासोस्वास आउखो वचनबल कायबल ए आठ प्राण जाणवा=

व ७ असन्निसन्निपंचिंदिएसु नवदसकमेण बोधव्वा ते
हिं सह विप्पओगो जीवाणं भन्नए मरणं ८ धम्माधम्मागासा
तिअतिअभेया तहेव अद्धा य खंधा देसपएसा परमाणू
अजीव चउदसभेया ९ धम्माधम्मा पुग्गल नह कालो पंच
हुंति अजीवा चलणसहावो धम्मो थिरसंठाणो अह
म्मो य १० अवगाहो आगासं पुग्गलजीवाण पुग्गला चउ
हा खंधा देसपएसा परमाणू चेव नायव्वा ११ समया

वलीमुहुत्ता दीहा पक्खा य मास वरिसा य भणिओ पलिआसा
गर उस्सप्पिणी सप्पिणी कालो १२ एगा कोडी सत्तसट्ठि ल
क्खा सत्तहत्तरि सहस्सा य दोय सया सोलहिआ आव
लिआ एगंमि मुहुत्तंमि १३ तिन्नि सहस्सा सत्त य सयाइं ते
वत्तरिं च ऊसासा एस मुहुत्तो भणिओ सव्वेहिं अणंतना
णीहिं १४ सायं उच्चगोयं मणुदुग सुरदुग पंचिंदिजाइ
पणदेहा आइतितणूण वंगा आइमसंघयणसंठा

Digitized with financial assistance from the Government of Maharashtra on 11 June, 2017

णा ॥ १५ ॥ वन्नचउक्कागुरुलहु परघाऊसास आयवुज्जो
यं सुभखगइ निमिणतसदस सुरनरतिरिआउतित्थयरं
॥ १६ ॥ तसबायरपज्जत्तं पत्तेअथिरं सुभं च सुभगं च सुसर
आइज्जजसं तसाइदसगं इमं होइ ॥ १७ ॥ नाणंतरायदस
गं नवबीए नीअसायमिच्छत्तं थावरदस निरयतिगं क
सायपणवीस तिरिअदुगं ॥ १८ ॥ इगबितिचउजाईओ कुखग
इ उवघाय हुंति पावस्स अपसत्थं वन्नचउ अपढमसं

घयणसंठाणा ॥ १९ ॥ थावरसुहुम अपज्जं साहारणमथिर
मसुभदुभगाणि दुस्सरणाइज्जजसं थावरदसगं इमं नेयं
॥ २० ॥ इंदिअकसाय अव्वय जोगा पंच चउ पंच तिन्नि कमा
किरिआओ पणवीसं इमाउ ताओ अणुक्कमसो ॥ २१ ॥ काइय
अहिगरणिआ पाउसिआ पारितावणी किरिआ पाणा
इवायारंभिअ परिग्गहिआ मायवत्तीया ॥ २२ ॥ मिच्छादंसण
वत्ती अपच्चक्खाणा य दिट्ठि पुट्ठी अ पाडुच्चिअ सामंता

कल्पीय नेसत्थिसाहत्थी २३ आणवणिवि आरणि आ अ
णाभोगा अणवकंखपच्चइआ अन्नापओगसमुदाण पि
ज्जदोसेरिआवहिआ २४ समिईगुत्तिपरीसह जइध
म्मो भावणचरित्ताणि पणतिगबावीसदसबार पंचभे
एहिंसगवन्ना २५ इरिआभासेसणादाणे उच्चारेसमि
ईसुअ मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्तीय अवमा २६ खु
हापिवासासीउन्हं दंसाचेलारइच्छिओ चरियानिसीहि

आसिज्जा अक्कोसवहजायणा २७ अलाभरोगतणफा
स मलसक्कारपरीसहा पन्नी अन्नाणसम्मत्तं इयबावी
सपरीसहा २८ खंतीमद्दव अज्जव मुत्तीतवसंजमेअ
बोधव्वे सच्चंसोयं अकिंचणंच बंभंचजइधम्मो २९ पढम
मणिच्चमसरणं संसारोएगयाय अन्नत्तं असुइत्तं आसव
संवरोय तहयनिज्जरानवमी ३० लोगसहावोबोही
दुल्लहधम्मस्ससाहगा अरिहा एयाओ भावणाओ भावि

=चौथचारित्रकहे छै=

अप्पापयत्तेण उ ॥ सामाइअत्थ पढमं ॥ छेउवठावणं भवे

बीयं ॥ परिहारविसुद्धीयं सुहुमं तह संपरायं च ॥ ३२ ॥ तत्तो

अ अहक्खायं खायं सव्वंमि जीवलोगंमि ॥ जं चरिऊण सु

विहिआ वच्चंति अयरामरं ठाणं ॥ ३३ ॥ बारसविहं तवो नि

ज्जरा य बंधो चउविगप्पो य ॥ पइ ठिई अणुभागो पएस

भेएहिं नायव्वो ॥ ३४ ॥ अणसणमूणोयरिआ वित्तीसंखे

वणं रसच्चाओ कायकिलेसो संलीणया य बज्झो तवो हो

इ ॥ ३५ ॥ पायच्छित्तं विणओ वेयावच्चं तहेव सिज्झाओ झाणं उ

स्सग्गो विअ अभ्भितरओ तवो होइ ॥ ३६ ॥ पयई सहावो वुत्तो

ठिई कालावहारणं अणुभागो रसो नेओ पएसो दलसंच

ओ ॥ ३७ ॥ पडपडिहारसिमज्ज हडचित्तकुलालभंडगा

रीणं जह एएसिं भावा कम्माणं वि जाणि तह भावा ॥ ३८ ॥ स

तपयपरूवणया दव्वपमाणं च खित्तफुसणा य कालो

य अंतरं भाग भाव अप्पाबहुं चेव ॥ ३९ ॥ संतं सुद्धपय

=तिके ईं ज्ञानावरणीयादिक कर्म केईं काल अंतर्मुहूर्त स्थिती वाला छै। केईं काल सित्तेर कोडाकोड सागर स्थिति वाला छै तिणने स्थिति बंध कहीजे। = तिके ईं कर्म केई एकस्थानक रस वाला। केई दुठाणिया रस वाला। केई कि कर्म त्रिठाणिया रस वाला छै तिणने रसबंध कहीजे = तिण इं कर्मना दलिया केई परमाणु तिणने प्रदेशबंध कहीजे = ३७ गाथा =

= मोक्षइति नामक समास ते हेतो: शुद्ध पद त्वात असंयुक्त पद त्वात एकपद त्वात् दिगर्थ =

= मोक्ष इति नाम किसाइत छै सु कहीजे शुद्धपद पणाथकी मोक्षइति नाम कहीजे =

=वासठमार्गणानाम= नरकगति१ तिर्यंचगति२ मनुष्यगति३ देवगति४ एकेंद्री१ बेंद्री२ तेंद्री३ चौरिंद्री४ पंचेंद्री५ पृथ्वीकाय१ अपकाय२ तेउकाय३ वाउकाय४ वनस्पतीकाय५ त्रसकाय६ मनोयोग१ वचनयोग२ काययोग३ स्त्रीवेद१ पुरुषवेद२ नपुंसकवेद३ क्रोध१ मान२ माया३ लोभ४ मतिज्ञान१ श्रुतज्ञान२ अवधिज्ञान३

=तस्य मोक्षस्य सत्पद रूपस्य प्ररूपणा विचारणा गत्यादि मार्गणाद्वारेण क्रियते सा सत्पद प्ररूपणा=

विद्यमान आकास राफूलरी परे ६४ मोक्ष रूप सो पद असत्तो नही है मोक्ष इति २ पदं ३ तिणमोक्ष पदरी

तो विक्तं तरखकुसुमं वन असंत मुक्खंति पयंसस ५

=तिण मोक्ष पदरी विचारणा तिने आदिदेकरने बासठ मार्गणा करने जिका करीजे तिका सत्पद प्ररूपणा कहीजे=

प्ररूपणाविचार मार्गणादिभिः ६२ गतिच्यार पांचइंद्रि छकाय जोगतीन वेदतीन

रूवणा मग्गणाइहिं ४४ गइ४इंदिय५काये६जोए३ वेए३

च्यारकषाय पांचज्ञान तिनअज्ञान संयमसात च्यारदर्शन कृष्णादिकलेश्या भव्य अभव्य समकित

कसाय४नाणेसु८ संजम७दंसण४लेसा६भव२सम्मे६

संज्ञि असंज्ञि आहारी अणाहारी मनुष्यगतिमे मुक्ति पंचेंद्रि मे मुक्ति त्रसमे मु० भव्यमे मु० संज्ञी मुक्ति जावे यथाख्यातचारित्रवालो मुक्तिजावे=

सन्नि२आहारे२ ४५ नरगइपणिंदितस भव सन्नि अह

क्षायिकसम्यक्त्ववालो मुक्तिजावे अणाहारी मुक्ति केवलदर्शनवा लो मुक्ति जावे = नहीजावे मुक्ति=

क्खाय खइअसम्मत्ते मुक्खोऽणाहार केवल दंसणनाणे न

=केवलज्ञानवालो मुक्तिजावे=

बाकीरी मार्गणा मे द्रव्य प्रमाण द्वारे विद्यमान सिद्धारा जीवद्रव्य ते हुंति हुवै अनंता =

सेसेसु ४६ दव्वपमाणे सिद्धाणं जीवदव्वाणि हुंति णंताणि

=द्रव्य प्रमाणद्वारे...

लोकाकाशरे असंख्यातमे भागे एकः सिद्ध वर्तेछे सगलाई सिद्ध लोकाकाशरे असंख्यातमे भागे वर्तेछे

लोगस्स असंखिज्जे भागे इक्को य सव्वे वि ४७ फुसणा अ

=क्षेत्रथकी स्पर्शना अधिकछे=

=क्षेत्रथकी अधिकछे=

मनपर्यवज्ञान४ केवलज्ञान५ मतिअज्ञान६ श्रुतअज्ञान७ विभंगज्ञान८ सामायिकचारित्र१ छेदोपस्थापनीयचारित्र२ परिहारविशुद्धिचारित्र३ सूक्ष्मसंपराय चारित्र४ यथाख्यातचारित्र५ देशविरतिचारित्र६ अविरतिचारित्र७ चक्षुदर्शन१ अचक्षुदर्शन२ अवधिदर्शन३ केवलदर्शन४ कृष्णलेश्या१ नीललेश्या२ कापोतलेश्या३ तेजोलेश्या४ पद्मलेश्या५ शुक्ललेश्या६ भव्य१ अभव्य२ उपशमसमकित१ क्षायकसमकित२ क्षयोपशमसम०३ मिश्रसमकित४ सास्वादनस०५ मिथ्यात्वस०६ संज्ञि१ असंज्ञि२ आहारी१ अणाहारी२ सर्व६२

=अंतरो किणने कहीजे जिकोमो क्षपहुंता ने फेर उजीरात में जायने फेर मुक्ति जावे सो अंतरो सिद्ध महाराज रे नही छै=

=यथा एक आकाशप्रदेश उपर रह्यो केवल परमाणु तिको सात आकाशप्रदेश फरसे ... एक आकाशप्रदेश उपर रह्या सिद्ध महाराज सात आकाशप्रदेश ने फरसे ... तेथकी स्पर्शना अधिक कही = तिके सिद्ध सगलाई=

काल एक सिद्धने अंगीकार करने सादि अनंत छे पडिवारा अभाव थकी

=सगलाई सिद्धने अंगीकार करने कालो कुं० काल अनादि अनंत छे

हिआ कालो इगसिद्ध पडुच्च साइओ णंतो पडिवायाभावा

=एक सिद्धने अंगीकार करने मे दिअनंत काल ...

सिद्धारे अंतरो नहीछे संसार सिद्ध सगला जीव थी अनंत भागे छै ते

ओ सिद्धाणं अंतरं नत्थि ४८ सव्वजियाणमणंते भागे ते तेसिं

सिद्धा केवलदर्शन केवलज्ञान क्षायिकभाव मे वर्तेछे पारिणामिक भाव पुनर्विशेषे फेर हुवै जीवतत्व पलो

दंसणं नाणं खइए भावे परि णामिए अ पुणो होइ जीवत्तं

थोडा नपुंसकवेदवाला सिद्ध स्त्रीसिद्ध पुरुष सिद्ध अनुक्रमे करने संख्यातगुणा अधिका छै=

=नपुंसकसिद्ध थकी स्त्रीवेदसिद्ध मोक्षेले संख्यातगुणा अधिका छै= स्त्रीवेदवाला सिद्धांसु पुरुषवेदवाला सिद्ध संख्यातगुणा अधिका छै। नपुंसक१० मुक्ति एकसमय मे जाय= स्त्रीवेदवाला २० मुक्ति जावे एक समय मे= पुरुषवेद वाला १०८ एक समय मे मुक्ति जावे=

४९ थोवा नपुंससिद्धा थीनरसिद्धा कमेण संखगुणा इअ

=इति अमुना प्रकारेण कण्ठ ...

एतत् आगो नवतत्वे ति के विण लेस थकी कह्या वर्णिता जीवादिक नवतत्व

मुक्खतत्तमेअं नवतत्ता लेसओ भणिआ ५० जीवाइ न

जिको पुरुष जाणे सरदहे तिण पुरुष रे जीव सम्यक्त्व जिको भाव करने नवतत्वां पुरुष मन मे

वपयत्थे जो जाणइ तस्स होइ सम्मत्तं भावेण सद्दहंतो

जीवादिक नवपदार्थ प्रतें नही जाणे तिणपुरुषरे समकित छै सगलाई जिनेश्वर भाषित

अयाणमाणे वि सम्मत्तं ५१ सव्वाइं जिणेसर भासिआइं

=कथितं कुं मोक्षतत्वकहो= =मोक्षतत्वकह्यो थको

वयणाइं नंन्नहा हुंति इय बुद्धी जस्स मणे सम्मत्तं निच्च
लं तस्स ४८ अंतोमुहुत्तमित्तंपि फासिअं जेहिं हुज्ज स
म्मत्तं तेसिं अवड्ढपुग्गल परिअट्टोचेव संसारो ४९ उस्स
प्पिणी अणंता पुग्गलपरिअट्टो मुणेअव्वो तेणंताती अ
द्धा अणागयद्धा अणंतगुणा ५० जिण अजिण तित्थतित्था
गिहि अन्नसलिंग थी नर नपुंसा पत्तेयसयबुद्धा बुद्धबो
हि इक्कणिक्काय ५१ इतिश्रीनवतत्त्वप्रकरणं॥ श्रीः॥

=पनरे भेदे सिद्ध जाणवा=

=तीर्थसिद्ध ते विधिश्री संघरी स्थापना पछै मुक्ति जाय= अतीर्थसिद्ध ते विधि श्री संघरी स्थापना विना मुक्ति जावै ते अतीर्थसिद्ध मरुदेवा माता=

=श्रावकमोक्ष ... =कीसायु ... महावीर स्वामी। भुवण कं० तीन भुवन स्वर्ग। मृत्यु। पाताल। तिणरे विषे। पईवं कं० दीवा समान महावीर स्वामी छै कीण कारण सुं दीवा समान जी वादिक सं पदार्थ तिण रा अर्थरा प्रकास कर्ता छै तिण वासते दीवा समान=

॥ भुवणपईवं वीरं नमिऊण भणामि अबुहबोहत्थं जी
वसरूवं किंचिवि जह भणिअं पुव्वसूरीहिं १ जीवामु
त्ता संसारिणो य तस थावरा य संसारी पुढवी जल जल
ण वाऊ वणस्सई थावरा नेया २ फलिहमणिरयणवि
द्दुम हिंगुल हरियाल मणसिल रसिंदा कणगाइ धाउ
सेढी वन्नी अरणेट्टय पलेवा ३ अब्भय तूरी उसं मट्टी
पाहाण जाइ अणेगा सोवीरंजण लोणाइ पुढवि भेया

=पाषाण खेडै करने संयुक्त इसी धोली मारी तिणने अरणेटो पाषाण कहीजे=२=

=अप्कायजीवांरा भेद वतावेछे=

इइच्चाइं ४ भूमंतरिरकमुदगं ओस्साहिमकरगहरित

णूमहिआ हुंतिघणोदहिमाई भेयाणेगाय आउस्स

५ इंगालजालमुम्मुर उक्कासणिकणगविज्जुमाईआ

अगणिजिआणंभेया नायव्वानिउणबुद्धीए ६ उब्भाम

गउक्कलिआ मंडलमहसुद्धगुंजवायाय घणतणुवा

याईया भेयारवलुवाउकायस्स ७ साहारणपत्तेआ व

णस्सईजीवा दुहासुए भणिआ जेसिमणंताणंतणु

=जिणां वनस्पति कायक अनंता जीवांरो एक शरीर हुवै तिणने साधारण वनस्पति कहीजे। निगोद पिण कहीजे=

=लोक १ सिद्ध के इक अनंतकायरा नाम लेने वतावेछे=

एगासाहारणा ते उ ८ कंदाअंकुरकिसलय पणगासे

वालभूमिफोडाय अल्लयतिअगज्जरमोछ वछुलाथेग

पल्लंका ए कोमलफलं च सव्वं गूढसिराइं सिणाइपत्ताइं

थोहरिकुमारगुग्गुल गिलोइपमुहाइं छिन्नरुहा १०

इच्चाइणो अणेगे हवंति भेआ अणंतकायाणं तेसिंपरि

जाणणत्थं लरकणमेअं सुए भणिअं ११ गूढसिरसंधिप

व्वं समभंगमहीरुहं च छिन्नरुहं साहारणंसरीरं तव्विव

=तिण वृत्येक वनस्पति रे साते त्रिकालं जीवक्षवे ति के वताव्ये छे= =उरे वार्थे= =वसमुचय =निश्चय मुं=

जिण वनस्पति ने तिके प्रत्येक वनस्पति कहीजे= एक शरीर रे विषे एक जीव छे

=प्रत्येक वनस्पती रा भेद वतावे छे= ऱ्ऐवपत्तेयं १२ एगसरीरे एगो जीवो जेसिं तु ते य पत्तेया

फल रे विषे फूल रे विषे छाल रे विषे काष्ठ रे विषे मूल रे विषे पान रे विषे बीज रे विषे प्रत्येक

फलफुल्लछल्लिकठा मूलगपत्ताणि बीयाणि १३ पत्तेय

वनस्पति ने छोडने पृथिव्यादिक सकललोक रे विषे वरते सूक्ष्म एकेंद्रिया जीव

तरुं मुत्तुं पंचवि पुढवाइणो सयललोए सुहुमा हवंति =दूसरा भेद वताव्ये छे=

निश्चय सुं अंतरमुहूर्त रा आयु वाला देखण में नही आवे ऐसा जीव कपर्दक

=ति के सूक्ष्म एकेंद्रिया जीव कीमा दिक छे= नियमा अंतमुहुत्ताउ अदिस्सा १४ संखकवड्डय =केर सूक्ष्म एकेंद्रिय जीव की सा ढक=

गंडोल जलोक चंदनक अलसीया लालीया जीव मेहरकिमि

गंडुल जलोय चंदणग अलस लहगाइ मेहरकिमि

पूअरका बेइंद्रिय जीव जाणवा मातृवाहिका जु जुका गोमी कंसला

=जल मांहि ला रा लाकालाप्र छे= पूअरगा बेइंदिय माइवाहाइ १५ गोमीमंकणजूआ =एकेंद्रिया ने=

कीडी उदेही मकोडा इली घृतेलिका वर्मयुका

पिपीलिउद्देहिया य मक्कोडा इल्लियघयमिल्लीओ सावयगो

=तेइंद्रि जीवरा भेद वतावे छे=२

=कालाभमरा=३ =खडमांकडी ति प्रसिद्ध आदि शब्द थी ...=

कीडीरी जाति गदहीया लोक चोरकीडा गोबररा कीडा धानरा कीडा

=ए सर्व जीवा की जाति= गींदजाईओ [illegible] गद्दहयचोरकीडा गोमयकीडाय धन्नकीडा

कुंथुवा गोपालिका जीव इलिका तेइंद्रि जीव इंद्रगोप आदि दे ने

य कुंथुगोवालिय इलिया तेइंदिय इंदगोवाई १७ च

चउरिंद्रिय जीव विछू ढिंकुण भमरा भमरी तिड्डा माखी

=चउरिंद्रिया ने= उरिंदिया य विच्छू ढिंकुण भमरा य भमरिया तिड्डा मच्छी =चउरिंद्री जीव=

डांस माछर कंसारिका कोलिक जीव विशेष पंचेंद्री जीव रा भेद वतावे छे

य डंसा मसगा कंसारीक विलडोलाय १८ पंचिंदिया य च

च्यार प्रकार रा छे नारकी तिर्यंच मनुष्य देवता नारकी सात प्रकार रा

उहा नारय तिरि[illegible] यमणुस्सदेवाय नेरइया सत्तविहा

जाणवा धरती रा भेद करने जलचर थलचर खेचर तिन

=रत्नप्रभा शर्करा प्रभा ... नारकी ने सात प्रकार रा कहीजे= हा नायव्वा पुढवीभेएणं १९ जलयरथलयरखयरा ति =जले चरंती ति जलचरा=

प्रकार पंचेंद्री तिर्यंच सुंसुमार मत्स्य काछबो

विहा पंचिं दि तिरिक्खा य सुसुमार मच्छ कच्छव गाहा

=जलचर तिर्यंच रा भेद वतावे छे= =स्थले चरंती ति स्थलचरा= =खे आकाशे चरंती ति खचरा=

=समुग्ग वृत्तसंपुटीभूता मिलिताः पक्षाः = खचरा पंखिया स्तद्विधाः = स्थलचर जीवरा तीन भेद वतावे छे =

संलिप्तांते समुग्गपक्षिणः कथ्यंते = वितता विस्तीर्णा एव पक्षाः संलिप्तांते विततपक्षिणः कथ्यंते =

=तिके स्थलचर = =निश्चेसुं =

मगरमछ भुजः जलचारी जीव जाणवा चौपद उरपरिसर्पः हीयासुं चाले भुजपरिसर्प

मगराय जलचारी २० चउप्पय उरपरिसप्पा भुअपरिसप्पा

भुजः स्थलचर जीव तीन प्रकार रा छे गाय प्रमुख सर्प प्रमुख प्रमुख जाणवा संखेप करने

य थलचरा तिविहा गोसप्पनउलपमुहा बोधव्वा ते समा

खेचर जीव रा भेद वतावे छे रोमपंखी चर्मपंखी चर्म चेड प्रमुख तिके प्रगट छे

सेणं २१ खयरा रोमयपक्खी चम्मयपक्खी य पायडा चेव

मनुष्य लोक थी बाहिर समुग्गपक्षी विततपक्षी

नरलोगाओ बाहिं समुग्गपक्खी विययपक्खी २२

थलचर खेचर समुर्छिम गर्भज बे प्रकार रा जीव मनुष्य

सव्वे जलथलखयरा समुच्छिमा गब्भया दुहा हुंति कम्मा

३० अकर्मभूमि रा मनुष्य ५६ अंतरद्वीप रा मनुष्य तीन भेद जाणवा मनुष्य रा दस प्रकार रा

कम्मगभूमी अंतरदीवा मणुस्सा य २३ दसहा भवणा

भुवनपति जाणवे आठ प्रकार रा वाणव्यंतर जाणवे ज्योतषी पांच प्रकार रा

हिवई अट्ठविहा वाणमंतरा हुंति जोइसिया पंचविहा दु

=पांच भरत पांच ऐरवत पांच महाविदेह सर्व पंदरा क्षेत्र ना मनुष्य कर्मभूमि रा कहीजे = पांच हेमवत पांच हिरण्यवत पांच हरिवर्ष पांच रम्यक पांच देवकुरु पांच उत्तरकुरु एवं तीस अकर्मभूमि ना मनुष्य युगलीया कहीजे = लवण समुद्र मांहे हिमवंत शिखरी पर्वत नी दाढा ऊपर छप्पन अंतरद्वीप ना मनुष्य युगली

=कल्पोपपन्नाः कल्पातीताः बारे देवलोक मांहे वर्तनवाला देवता कल्पोपपन्न कहीजे नवग्रैवेयक पंचानुत्तर मांहे वर्तनवाला देवता कल्पातीत कहीजे =

=सर्वकर्मनिर्मुक्ता जीवाः =

दोय प्रकार रा वैमानिक देवता छे संसारी जीव तोकता पनरे भेद जाणवा तीर्थसिद्ध

विहा वेमाणिया देवा २४ सिद्धा पंनरसभेया ति

अतीर्थ सिद्धादिक भेद करने इण रीते संक्षेप करने जीवां रा विकल्प भेद समाख्याताः

त्थातित्थाइसिद्धभेएणं एए संखेवेणं जीवविगप्पा सम

कह्या एकेंद्रियादिक जीवां रे शरीर प्रमाण स्वकाय स्थिति प्रमाण

क्खाया २५ एएसिं जीवाणं सरीरमाऊ ठिई सकायंमि

दस प्राण रो प्रमाण योनि रो प्रमाण जिण जीवां रे जिका छे तिका कहिसुं जघन्य तो

पाणा जोणिपमाणं जेसिं जं अत्थि तं भणिमो २६ अंगु

गुल रो असंख्यातमो भाग प्रमाण शरीर एकेंद्रिय जीवां रो सर्व सूक्ष्म बादर पृथ्वीकायादिक रा भेद करने भिन्न

ल असंखभागो सरीरमेगिंदियाण सव्वेसिं जोयण

हजार जोजन किंचित् अधिक प्रत्येक वनस्पती रो शरीर बारे जोजन प्रमाण शरीर बे

सहस्समहियं नवरं पत्तेयरुक्खाणं २७ बारस जोयण

तीन गाउ तीन कोस रो शरीर एक जोजन प्रमाण अनुक्रम करने जाणवो बेइंद्रियजीव शंखादि

तिन्नेव गाउआ जोयणं च अणुकमसो बेइंदि

=तेंद्रियरो जाणवे= =चौरिंद्रियरो शरीर जाणवे= =बेंद्री तेंद्री चौरिंद्री जीवां रो शरीर रो प्रमाण वतावे छे=

=नारकी रा जीवां रो शरीर रो प्रमाण बतावे छै=

यतेइंदिय चउरिंदियदेहमुच्चत्तं २८ धणुहसयपंचपमाणं

नेरइयाँसत्तमाइ पुढवीए तत्तो अद्धद्धूणं नेयारयणप्प

हाँजाव २९ जोयणसहस्सपमाणं मच्छाउरगायगब्भया

हुंति धणुहपुहुत्तं पक्खी भुयचारी गाउयपुहुत्तं ३०

खयराधणुहपुहुत्तं भुयगाउरगाय जोयणपुहुत्तं

गाउयपुहुत्तमित्ता समुच्छिमा चउप्पया भणिआ ३१ ११

छच्चेवगाउआइ चउप्पयागब्भया मुणेअव्वा कोसतिगं

=सनत्कुमार। माहेंद्र दोय देवलोक रै विषै ६ हाथरो देहमानकवै= ब्रह्म। लांतिक दोय देवलोक रै विषै ५ हाथ देहमानकवै= शुक्र सहस्रार दोय देवलोक रै विषै ४ हाथ देहमानकवै= आनत। प्राणत। आरण। अच्युत च्यार देवलोक रै विषै ३ हाथ देहमानकवै= नवग्रैवेयक रा देवतां रो २ हाथ रो देहमानकै= पंचानुत्तर रा देवतां रो १ हाथ रो देहमानकै=

चेमणुस्सा उक्कोससरीरमाणेणं ३२ ईसाणंतसुराणं रय

णीओ सत्तहुंति परिमाणं दुदुदु चउक्के गेविज्जगेसु इक्किक्क

परिहाणी ३३ बावीसा पुढवीए सत्तय आउस्स तिन्निवा

उस्स वाससहस्सा दसतरु गणाण तेउ तिरत्ताउ ३४ वा

साणं बारसाउ बेइंदिअं तेइंदिआणं अणुक्कमसो अ

उणपन्नदिणाइं चउरिंदीणं तु छम्मासा ३५ सुरनेरइआ

णठिई उक्कोसा सागराणि तित्तीसं चउपयतिरिअमणु

=पंचानुत्तर रा देवतां रो। सातमी नारकी रा २। नारकीयां री जांणवी=

सा तिन्नि य पलिय तिरिमाउ ति अह जलयर उर भुयगाणं

परमाऊ होइ पुव्वकोडीओ पक्खीणं पुण भणिओ असंख-

भागो य पलियस्स ॥३७॥ सव्वे सुहुमा साहारणा य संमुच्छि-

मा मणुस्सा य उक्कोस जहन्नेणं अंतमुहुत्तं चिय जियंति

ओगाहणाउमाणं एवं संखेवओ समक्खायं जे पुण इ-

त्थ विसेसा विसेससुत्ताउ ते नेया ॥ एगिंदिया य सव्वे अ-

संखउस्सप्पिणी सकायंमि उववज्जंति चयंति य अणंतका-

यु×

या अणंताओ ॥४०॥ संखिज्जसमा विगला सत्तट्ठभवा पणिं-

दि तिरि मणुआ उववज्जंति सकाए नारय देवा य नो

चेव ॥४१॥ दसहा जियाण पाणा इंदि उसास आउ

बलरूवा एगिंदिएसु चउरो विगलेसु छ सत्त अट्ठेव ॥४२॥

असन्नि सन्नि पंचिंदिएसु नव दस कमेण बोद्धव्वा ते-

हिं सह विप्पओगो जीवाणं भण्णए मरणं ॥४३॥ एवं अणो-

रपारे संसारे सायरंमि भीमंमि पत्तो अणंतखुत्तो जी-

=नहीपांम्यो हे धर्म इसें जीवें पार करनें रहित इसो भयंकर संसार समुद्र इणरीतें अणंतीवार पाम्यो=

वेहिं अपत्तधम्मेहिं ४४ तह चउरासी लक्खा संखा जो
णीण होइ जीवाणं पुढवाईण चउण्हं पत्तेयं सत्त सत्तेव
४५ दस पत्तेयतरूणं चउदस लक्खा हवंति इअरेसु
विगलिंदिआण दो दो चउरो पंचेंदितिरिआणं ४६ चउ
रो चउरो नारयसुरेसु मणुआण चउदस हवंति संपिं
डिआय सव्वे चुलसी लक्खाउ जोणीणं ४७ सिद्धाणन
त्थि देहो न आउ कम्मं न पाण जोणीउ साइ अणंता ते

=श्री शांतिसूरि नामा आचार्य तिणे भगवंतरा वचनरे अनुसारे...

सिं ठिई जि... णागमे भणिआ ४८ काले अणाइ निह
णे जोणीगहणंमि भीसणे इत्थ भमिआ भमिहिंति चिरं
जीवा जिणवयणमलहंता ४९ ता संपइ संपत्ते मणुअ
त्ते दुल्लहे वि सम्मत्ते सिरिसंतिसूरिसिट्ठे करेह भो उज्ज
मं धम्मे ५० एसो जीववियारो संखेवरुईण जाणणाहे
उ संखित्तो उद्धरिओ रुद्दाओ सुयसमुद्दाओ ५१ इति जी
ववियारप्रकरणं॥